सारा कल्प ही हमारे संकल्प से चलता है

संकल्प को कोई साधारण बात मत समझिये। आप समझते है की मेरा संकल्प उठा, उसको दबा दिया। संकल्प चला, उसको मुख मे लाकर वर्णन कर दिया। संकल्प चला उसको कर्म मे लाकर कोइ को नुकशान कर दिया, किसी को दु:ख दे दिया। तो संकल्प से जो हम कार्य करते है तो यह हमारा साधारण लौकिक और विकार युकत संकल्प है। सारे दिन मे उठते बैठते, चलते-फिरते हम कितने संकल्प करते है! हमारी सब गति-विधियाँ संकल्प से तो है। सारा कल्प ही हमारे संकल्प से चलता है। कल्प और संकल्प सम्बन्धित है। यह कल्प क्या है? कल्प को कल्प क्यो कहते है? 5000 वर्षो तक हमारे जो अलग अलग संकल्प चलते रहते है। उसके बाद फिर पुनरावृत होते रहते है। जब तक भिन्न भिन्न संकल्प चलते है, वह समय अवधि 5000 वर्ष है। चलते तो बाद मे भी है लेकिन उनकी पुनरावृति होती है, दूसरा कल्प शरू होता है चक्र दूसरा होता है। संकल्प से हमारा कर्म, हमारा भाग्य बनता है, संकल्प से ही हम महानता और अथवा पतन की और जाते है। यह सीढी उतरना और चढना –संकल्पो से ही है। तो संकल्प को इतना महत्व देते है? या इसको ऐसे ही खर्च कर देते है?

मानव कल्याण में आपका क्या योगदान है

कल्याण होता है कर्मों से। कर्म और संस्कार का सम्बन्ध है संकल्पों से। संस्कार हैं गुप्त संकल्प। सुख-दु:ख का सम्बन्ध है कर्मों से। विचार अथवा संकल्प के बारे में समझना जरूरी है। विचार में तीन चीज़ें शामिल हैं - (1) इच्छायें (2) स्मृतियाँ। स्मृतियाँ उचित-अनुचित, आवश्यक-अनावश्यक, व्यक्त-अव्यक्त रूप की होती है। (3) संवेग। चाहे प्रेम के रूप में या घृणा के रूप में।

वैसे तो कई प्रकार के थॉट्स (विचार) हैं परन्तु यहाँ हमारा सम्बन्ध उपरोक्त तीन से हैं। स्वयं ठीक होने से अर्थात् स्वयं बदलने से ही विश्व बदलेगा। इसलिए अपने विचार पहले बदलें अर्थात् ठीक हों। फिर कहा जाता है Example is better than perception (व्याख्यान से व्यवहार और आचरण श्रेष्ठ है) जिसका जीवन ही खुली किताब के समान है वह ज़्यादा कहता नहीं, उसका जीवन ही दूसरों के लिए प्रेरणा बन

जाता है। हमारा कल्याण जितना होगा, उतना विश्व का कल्याण होगा और जितना विश्व का कल्याण होगा उतना हमारा। इसलिए किसी ने कहा है कि Thoughts can move mountains (विचार पर्वतों को भी चला सकते हैं) दुनिया में सबसे शक्तिशाली हैं विचार। उदाहरणार्थ, किसी ने एटम बम बनाया, किसी ने ताजमहल बनाया, तो ज़रूर उसे पहले विचार आया ना! परन्तु हम विश्व कल्याण में सहयोगी बनेंगे जब हम दुनिया के लिए आदर्श बनें, उदाहरण बनें। उसके लिए आदर्श और श्रेष्ठ विचार करें। हमारे संकल्प में परिवर्तन तब होगा जब हमारा उस कल्याणकारी निराकार परमात्मा से सम्बन्ध होगा। फिर हम विषय-वासना-वैभवों के पीछे न भागेंगे। परमात्मा की याद से निर्णय भी ठीक होगा क्योंकि वह बुद्धिवानों का बुद्धिवान है। प्रेम हमारा पवित्र हो जायेगा क्योंकि वह परम पवित्र है। इसलिए परमात्मा को कल्याणकारी कहा गया है क्योंकि वह हमारे विचारों को बदलता है। इस प्रकार, हम अपना भी कल्याण करेंगे, दूसरों का भी। यह सहयोग हो। सहयोग शब्द ही 'योग' से बना है। जब तक हमारा योग न होगा, हम सहयोग न दे पायेंगे। आज दुनिया में सहयोग तो सब अपनों को दे रहे हैं परन्तु परमात्मा से योग कोई नहीं कर रहे हैं। अत: विश्व का कल्याण नहीं हो रहा है। विश्व कल्याण के लिए हमारा असल सहयोग अथवा योगदान तो ईश्वर पिता से योग लगाना ही है।

Law of Karma

ज्ञान में आने से पहले भी हम सुनते थे कि कर्म से मनुष्य को फल मिलता है। सुख और दु:ख कर्म के आधार पर मिलते हैं। जैसा करोगे वैसा भरोगे, वैसा पाओगे। यह है लॉ ऑफ कर्मा (Law of Karma)। कर्म का सिद्धान्त भारत में मशहूर है। मैं पहली बार ऑस्ट्रेलिया में सन् 1971 में गया, वहाँ सिडनी में एक यूनिवर्सिटी में मेरा भाषण था। फिलॉसाफी के विद्यार्थी और प्राफेसर थे। जो विभाग के मुख्यस्थ (Head of the Department) थे उन्हों ने जब सभा को मेरा परिचय करवाया तो कहा, Look here here is a gentleman from india, he has read about the karma philosophy, which belongs to the country from where he comes यह व्यक्ति भारत से आया है, आपको मालूम है, आपने सुना है, भारत का एक सिद्धान्त

प्रसिद्ध है विश्व में, भारत ने विश्व को कर्म का सिद्धान्त दिया है, यह व्यक्ति वहाँ से आया है। तो लोग यह समझते हैं कि पुनर्जन्म और कर्म का सिद्धान्त, ये भारत की देन हैं विश्व की फिलॉसाफी को। लेकिन बाबा ने हमें क्या बताया है? बाबा कहते हैं, बच्चे, संकल्प जो है यह कर्म का भी बीज है। फल संकल्प से मिलता है। जैसा संकल्प करोगे वैसा कर्म होगा और जैसा कर्म होगा वैसा फल मिलेगा। यह बात तो ठीक है, जैसा कर्म होगा वैसा फल मिलेगा लेकिन कर्म भी कैसा होगा? जैसा आपका संकल्प। इसलिए बाबा ने कहा, बच्चे कर्म पर ध्यान दो, संकल्प पर ध्यान दो। जब तक संकल्प आपके ठीक नहीं होंगे, कर्म ठीक नहीं होगा। पहले कोशिश करते रहे, कर्म ठीक करें, पर वे कैसे ठीक होंगे यदि मन में हलचल, अस्तव्यस्तता, उलझन और प्रश्न हैं जिनका समाधान नहीं मिला है। कर्म ठीक तब होगा जब संकल्प ठीक होंगे। उसके लिए बाबा कहते हैं, पॉजिटिव थिंकिंग करो। संकल्प का लीकेज, वेस्टेज बन्द करो क्योंकि इससे बहुत शक्ति वेस्ट होती है। इसे बचाओ।

विचार, आचार का मूल है

क्या विचार आना चाहिए और क्या विचार नहीं आना चाहिए, क्या पोजेटिव विचार है और क्या नेगेटिव विचार है, शुभ विचार क्या है और अशुभ विचार क्या है, कल्याणकारी विचार क्या है और अकल्याणकारी विचार क्या है, इसका ज्ञान होना चाहिए। कहा गया है कि विचार, आचार का मूल है। जैसे सोचोगे, वैसे बनोगे। इसएि बाबा हमारे विचारों को बदलते हैं। कैसे बदलते हैं? विचार को बदलने के लिए विचार देते हैं। जैसे काँटे को काँटा निकालता है। कहते हैं कि काँटे को निकालने के लिए काँटा ही चाहिए। सूई भी तो एक काँटा है। वह काँटा कुदरत से बना हुआ है और यह मनुष्य का बनाया हुआ है। जैसे आपने देखा होगा कि कारपेन्टर कील को निकालने के लिए दूसरी कील का इस्तेमाल करता है क्योंकि कील को निकालने के लिए कील ही चाहिए। उसी प्रकार विचार को निकालने के लिए विचार ही चाहिए। बाबा हमें विचार देते हैं, जिनको हम शुभ विचार अथवा शुभ संकल्प, श्रेष्ठ सकंल्प कहते हैं। बाबा की ये सब मरुलियाँ कया हैं? ये सब श्रेष्ठ विचार हैं, शुभ संकल्प हैं, पोजेटिव थॉट्स हैं। ये

वण्डरफुल थॉट्स (स्वर्णिम विचार) हैं। बाबा की सारी शिक्षायें क्या हैं? श्रेष्ठ विचारों का समूह हैं शुभ विचार का संग्रह हैं। बाबा क्या विचार देते हैं? मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा ज्योतिर्बिन्दू हँ। पहले हमारा विचार क्या था? मैं शरीर हूँ। मैं स्त्री हूँ, मैं पुरुष हूँ, फलाने देश का रहने वाला हूँ। अभी बाबा ने क्या विचार दिया? मैं आत्मा हूँ, निराकार हूँ, परमधाम का रहवासी हूँ। न पुरुष हूँ, न स्त्री हूँ, मैं एक ज्योतिर्बिन्दु आत्मा हूँ। ग़लत विचार को निकालने के लिए बाबा ने हमें ये श्रेष्ठ विचार दिये। जिस विचार से कर्म बिगड़ गये हैं, ससांर खराब हुआ है उसको जब तक निकालेंगे नहीं, तब तक संसार कैसे अच्छा होगा? जो श्रेष्ठ विचार बाबा ने दिये हैं, उनका नाम है "ज्ञान"। उनको हम कहते हैं शिक्षा। बाबा सदा संग रहे तुम्हारी शिक्षा.....। बाबा ने हमें कौन-सा विचार दिया? मैं कौन हूँ, किसकी सन्तान हूँ! अभी तक तो हम लौकिक पिता को ही अपना पिता समझकर बैठे थे। अभी मालूम पड़ा कि वह तो शरीर का पिता है। मुझ आत्मा का पिता तो परमात्मा है। बाबा ने आकर यह नया विचार दिया, नया ज्ञान दिया, नयी शिक्षा दी। पहले हमें मालूम नहीं था। मालूम पड़ने से हमारे विचार बदल गये, विचार बदलने से वह कर्म बदलने का साधन बन जायेगा। देखिये, बाबा ने कितनी विचित्र विधि बतायी है! कितनी युक्तियुक्त विधि बतायी है!

संकल्प-शक्ति

योग क्या हैं? श्रेष्ठ संकल्पों की स्मृति। हमारे ये संकल्प जितने तीव्र होंगे उतना हमारा योग भी तीव्र हागेा। ये श्रेष्ठ सकंल्प हैं याद के संकल्प। ये याद रूपी संकल्प हैं। इन संकल्पों में और कोई संकल्प मिश्रित नहीं होंगे। ऐसा नहीं, एक संकल्प आ गया कि मैं आत्मा हूँ, दूसरा आ गया कि मैं डॉक्टर हूँ, मुझे डिस्पेन्सरी में जाना है। तो हमारा योग कैसे लगेगा? योग करने के लिए बैठ गये, योग करना आरम्भ किया उतने में याद आया कि अरे, आज तो मुझे रसोई में जाकर खाना बनाना है। यह योग नहीं हुआ। योग है जिसमें एक संकल्प की धारा होती है। धारा में अन्तर नहीं होता, निरन्तरता (continuity) होती है। तेल की धारा में अन्तर नहीं होता, तेल की बूँद एक से एक मिली हुई रहती है। निरन्तर गिरता रहता है। ये जो हमारे संकल्प हैं एक से एक जुटे हुए हैं, आत्मा के, परमात्मा के, परमधाम के, स्वधर्म के, स्वस्थिति के। इनके बारे में ही

हमारे संकल्प हों, दूसरे संकल्प कोई न आयें। ये शक्तिशाली संकल्प हों, अखण्ड संकल्प हों, निश्चयात्मक संकल्प हों। योग का दूसरा नाह ही निश्चय है। मैं "आत्मा हूँ", यह सिर्फ संकल्प नहीं है, यह निश्चय है, इसमें निश्चयात्मक रूप में स्थित होता हूँ कि मैं आत्मा हूँ। जब हम निश्चयपूर्वक संकप करेंगे तभी अनुभव होगा। वैसे ही साधारण संकल्प से अथवा सिर्फ यह सोचने से कि मैं आत्मा हूँ, इससे अनुभव नहीं होगा। अगर किसी को योग में अनुभव नहीं होता है माना उसने योग में जो भी संकल्प किया, निश्चयात्मक संकल्प नहीं किया अथार्त् उसके संकल्पों में निश्चय नहीं था। इसलिए योग में हमारे निश्चयात्मक संकल्प हों ताकि हम अनुभव कर सकें।

शिवसंकल्पमस्तु

पुरुषार्थ की नींव या आधार-शिला है हमारा संकल्प। बहुत-से पुराने शास्त्र हैं, उनमें बारबार आता है कि "शिवसंकल्पमस्तु"। सारा मंत्र पढ़के, आखिर में आता है, "शिवसंकल्पमस्तु", "शिवसंकल्पमस्तु"। हमारा कल्याणकारी संकल्प हो। मेरे से पूछो, इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की सबसे महान देन क्या है? मैं यही कहूँगा कि संकल्प का महत्व। आपके संकल्प का महत्व क्या है? उसकी ताकत क्या है? उसकी विशेषता क्या है? ये सब बातें बाबा ने बतायी हैं। बाबा की ये बातें और कहीं नहीं बतायी गयी हैं। बाबा की ये बातें बहुत-बहुत अमोघ हैं, जो आपको कहीं नहीं मिलेंगी। सारा इतिहास आप पढ़ डालो, सारे धार्मिक ग्रंथ, शास्त्र, पुराण पढ़ डालो, संकल्प का महत्व जो बाबा ने बताया है, किसी ने नहीं बताया।

पहली बात है, बाबा ने कहा है कि संकल्प से सृष्टि रची जाती है। ओहो! संकल्प इतना बड़ा है, जिससे सृष्टि रची जाती है! सृष्टि कहाँ और संकल्प कहाँ! लेकिन बाबा कहते हैं कि संकल्प से सृष्टि रची जाती है, संकल्प में वो शक्ति है! कहते है विचार, संसार को बदल देते हैं (Ideas move the world)। संसार विचारों पर टिका है। विचार ही संसार की नींव हैं। बाबा कहते हैं कि आपके संकल्प से सृष्टि रची जाती है। अगर आप शुद्ध संकल्प करेंगे तो सृष्टि रची जायेगी। तो आप कनिष्ट विचार (negative thoughts) छोड़ोगे या नहीं छोड़ोगे? अगर आप समझेंगे कि मेरे संकल्प से

ही अच्छी या बुरी, सुखमय या दु:खमय सृष्टि रची जायेगी, तो अब आपको निर्णय कर लेना चाहिए कि मेरा संकल्प कैसा हो? पहली बात बाबा यही कहते हैं कि बच्चे, संकल्प से सृष्टि रची जाती है, यह याद रखो। इस बात का महत्व कभी मत भूलो। यह मत सोचो कि मेरे मन में बुरा संकल्प आया था, उसको बाहर आने नहीं दिया, उसको वहीं खत्म कर दिया। बाबा ने यह नहीं कहा, वचन या कर्म से सृष्टि रची जाती है। बाबा ने कहा है, संकल्प से सृष्टि रची जाती है। वचन और कर्म तो बाद में आते हैं। इन सबका नींव संकल्प है। संकल्प से सृष्टि रची जाती है - यह आप याद रखोगे तो परिवर्तन आयेगा। आपके शक्तिशाली संकल्प हों ताकि शक्तिशाली सृष्टि रची जाये। आपका संकल्प बहुत ही शक्तिशाली होना चाहिए। संकल्प में शक्ति किस चीज़ की हो? पवित्रता की, ज्ञान की, योग की, अष्टशक्तियों की। हम मास्टर सर्वशक्तिमान हैं क्योंकि हमें एक नयी सृष्टि रचनी है हमारे संकल्प से। पहले यह समझो कि मैं मास्टर रचयिता हूँ। आपने बाबा की जीवन कहानी में सुना होगा। बाबा ने ब्रह्मा बाबा को एक दृश्य दिखाया, दो सितारे ऊपर से उतर आये और वे दवी-देवता बन गये। उसके बाद बताया गया, आपको ऐसी नयी सृष्टि बनानी है। ब्रह्मा ने बोला, उसने बताया तो नहीं, नयी सृष्टि कैसे बनानी है? लेकिन धीरे-धीरे शिव बाबा ने क्या बताया? संकल्प से सृष्टि रची जाती है। आपको जो सृष्टि रचनी है, उस सृष्टि को संकल्प से रचना है। पहले-पहले यह समझो कि मैं मास्टर रचयिता हूँ। अपनी पोजिशन को समझो, अपने रोल को समझो, अपने गोल को समझो। यह हमारा लक्ष्य (गोल) है कि नयी सृष्टि रचनी है। हमारा पार्ट (रोल) है मास्टर रचयिता बनना। उस पार्ट और लक्ष्य को पूरा करने का तरीका क्या है? शक्तिशाली संकल्प। शक्तिशाली सकंल्प माना योग से युक्त, रूहानियत से युक्त, पवित्रता से युक्त संकल्प। ऐसे संकल्प से सृष्टि रची जायेगी।

दूसरा, बाबा ने कहा है कि यह संकल्प तीली है। जैसे माचिस की तीली होती है, उसको जलाकर फेंक दिया तो बड़ी-बड़ी इमारतों को भी वह जला देती है। एक चिनगारी से सारा भवन भस्म हो जाता है। संकल्प रूपी जो तीली है, चिनगारी है इसको जलाकर अपने पुराने संस्कारों को दग्ध करना है। संकल्प का यह दूसरा रूप है। आपको नयी

सृष्टि रचनी है, संकल्प से। आपको विकर्म दग्ध करने हैं, संकल्प से। यह सोचो कि मेरे संकल्प ऐसे हों जिससे मेरे पुराने सारे विकर्म दग्ध हों।

बाबा कहते हैं कि जैसा लक्ष्य, वैसे लक्षण होते हैं। हमारा लक्ष्य तो बहुत ऊँचा है लकिन हमारे में वो लक्षण नहीं है। लक्ष्य और लक्षण के बीच जो खाई है उसको कैसे भरें? उसको जाडे ़ने वाला पुल है - सकंल्प। जब तक आपका संकल्प रूपी पुल नहीं होगा कि मुझे गैप (खाई) को भरना है, तब तक वह गैप ऐसे ही रहेगा। यह भी याद रखो कि संकल्प लक्ष्य और लक्षणों को जोड़ने वाला पुल है। यह कौन-सा संकल्प है? बाप समान बनने का संकल्प। बाप जैसा मुझे बनना है - यह संकल्प जो है, एक पुल है। यह पुल ही आपकी वर्तमान स्थिति और भविष्य में क्या बनना चाहते हैं, उसको जोड़ने वाला है। उन दोनों को मिलाने वाला, दोनों के बीच का रिक्त स्थान खत्म करने वाला यह संकल्प है। बाप को हमेशा सामने रखो। अपने संकल्पों को, विचारों को बाप से टैली (तुलना) करो, मिलाओ। जो कर्म करो तो देखो बाप ने ऐसा कर्म किया था? हाँ, तो तब उसको करो। जब यह संकल्प आपको रहेगा कि मुझे बाप समान बनना है, तब वह गैप पूरा होगा। अगर यही संकल्प आपकी बुद्धि से खिसकेगा तो यह गैप भरेगा नहीं। देखिये, संकल्प का कितना महत्व है!

बाबा कहते हैं, यह संकप रहे कि मैं ब्राह्मण हूँ। तो शूद्रों का संकल्प मुझे आ नहीं सकता। ब्राह्मण कभी मलेच्छों का काम नहीं कर सकता। लौकिक में भी जो शुद्ध ब्राह्मण होगा, उसको कहो, तुम माँस खाओ, तो कहेगा, क्या बात करते हो? मैं ब्राह्मण हूँ, मलेच्छ भोजन नहीं खा सकता। अभी तो वह सब खत्म हो गया, अभी तो एक ही वर्ण रह गया। उस समय के ब्राह्मण को सदा यह स्मृति रहती थी कि मैं ब्राह्मण हूँ, मैं कोई मलेच्छ कर्म नहीं कर सकता, कोई मलेच्छ अन्न खा नहीं सकता। आपको यह संकल्प होगा कि मैं सच्चा-सच्चा ब्राह्मण हूँ, शुद्धि, पवित्रता, सात्त्विकता, योग ये ही मेरे ब्राह्मणत्व हैं, मेरे कर्तव्य हैं। इस तरह का संकल्प आप में सदा जाग्रत रहता है तो आप में शालीनता तथा दैवी लक्षण आयेंगे जिसको बाबा रॉयल्टी कहते हैं।

बाबा कहते हैं कि संकल्प इतना शक्तिशाली होता है कि जब वह योग में लगन का रूप ले लेता है, सशक्त प्रेम का रूप ले लेता है, योग अग्नि का रूप ले लेता है तो उससे

ही सारे विकर्म दग्ध होते हैं। अपने संकल्प को अगर प्रेम से लवलीन कर दो, संलग्न कर दो तो वही संकल्प आपकी अग्नि बन जायेगा। संकल्प तीली भी है, संकल्प अग्नि भी है। अगर आप चाहते हैं कि आपका योग श्रेष्ठ स्तर का हो, उसके लिए संकल्प को प्रेम से भर दो अथवा योग में आपका संकल्प ही प्रेम का स्वरूप हो। संकल्प के अन्दर प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी न हो। जब संकल्प का यह रूप होगा तो और कुछ सूझेगा नहीं, तब योग अग्नि का रूप होगा। बाबा कहते हैं कि संकल्प टिकट है। फरिश्ता बनने की टिकट कटा लो। आबू आने के लिए आपको अपने-अपने स्थानों से टिकट लेनी पड़ती है। कोई भी यात्रा करने के लिए, फलाने स्थान पर जाने के लिए टिकट कटानी पड़ती है। हमको जाना है अव्यक्त वतन में। स्वाभाविक बात है कि वहाँ जाने के लिए भी टिकट लेनी पड़ेगी। हमें कौन-सी टिकट या यात्रा पत्र चाहिए अव्यक्त वतन जाने के लिए? मुझे फरिश्ता बनना है - यह संकल्प रूपी यात्रा-पत्र। फरिश्ता बनने की टिकट यही है। यही संकल्प है, मैं फरिश्ता हूँ, मुझे फरिश्ता बनना है। बाबा कहते हैं, जो संकल्प करते हो, उसको पूरा करो, कर्म में पूरा लाओ। सोचो और करो। संकल्प करके छोड़ो नहीं, कल के लिए टालो नहीं। आधे मन से मत सोचो, जो भी सोचते हो पूरे मन से सोचो। करो भी पूरा। दिल, जान लगाकर करो। बाबा कहते हैं, संकल्प में प्रेम और निश्चय का सन्तुलन होना चाहिए। पूर्ण संकल्प माना उसमें लव और लॉ का, स्नेह और शक्ति का, ज्ञान और योग का बैलेन्स रखने के लिए बाबा ने कहा है, उन सबका पूरा बैलेन्स (सन्तुलन) होना चाहिए। इन सब बातों का पालन करेंगे तो हम तीव्र पुरुषार्थ कर सकेंगे, पूर्ण पुरुषार्थ कर सकेंगे।

बी.के.जगदीशचद्र हसीजा